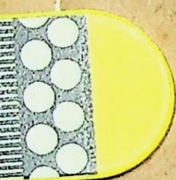
सरल पिंगल





सुलभ-साहित्य-माला—७

सरल पिङ्गल



हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग।

सुलभ-साहित्य-माला—७

सरल पिंगल

लेखक,

पुत्तनलाल विद्यार्थी, विशारद
लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद

—

प्रकाशक,
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
प्रयाग
सं० १९७८

तीसरी बार] [मूल्य चार आना

सुलभ-साहित्य-माला ७

प्रकाशक
हिन्दी-साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग

मुद्रक
सूरजप्रसाद खन्ना,
हिन्दी-साहित्य प्रेस,
प्रयाग

विषय सूची

दूसरे संस्करण
की
भूमिका।

हमारा अनुभव है कि पिंगल के पढ़ने में विद्यार्थियों को विशेष कठिनाइयां पड़ती हैं। लखनऊ ऐसे बड़े नगर में भी इस विषय के पढ़ानेवाले सुलभ नहीं, फिर परीक्षार्थियों के लिए गुरु खोजना और उससे शिक्षा प्राप्त करने का प्रबंध करना बहुधा दुःसाध्य होता है। सुना है कि एक दफ़ा एक छोटे से नगर के ११ परीक्षार्थी प्रथमा परीक्षा की फ़ीस भेज चुकने पर भी पिंगल के डर से परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुए। अतः एक सरल सुबोध और छोटी सी पुस्तक की आवश्यकता समझ कर हमने संवत् १९७२ में "हिन्दी की प्रथमा परीक्षा में पिंगल" नाम की पुस्तक लिख कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के अर्पण की थी। यह जान कर हमें बहुत संतोष हुआ है कि इसे विद्यार्थियों ने पसंद किया। अब परीक्षा समिति ने इसे प्रथमा परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों में चुना है और आज्ञा दी है कि इसका दूसरा परिवर्द्धित और संशोधित, संस्करण तैयार किया जाय। कदाचित् हम इस आज्ञा के पालन में बिलकुल ही असमर्थ होते, यदि हमारे श्रद्धेय मित्र विद्वद्वर अध्यापक रामदासजी गौड़ एम० ए० इस कार्य का सारा भार अपने ऊपर न ले लेते। उन्होंने, अस्वस्थ होने पर भी, कुछ आवश्यक

छंदों का समावेश किया तथा बीस वर्ष पूर्व प्रकाशित "रसिक वाटिका" नाम की पत्रिका में स्वर्गीय राय देवीप्रसाद जी "पूर्ण" द्वारा लिखित "प्रस्तार प्रश्नोत्तरी" भी जोड़ दी। हमें संपूर्ण पुस्तक का सम्पादन करना हीं रह गया। इस कार्य्य में हमने पूर्ववत् यह ध्यान रक्खा है कि भाषा बहुत ही सरल हो, चाहे कहीं पुनरुक्ति दोष भले ही आजाय पर जटिलता न रहने पावे और आशय ठीक ठीक समझ में आजाय।

हिन्दी प्रेमी पूर्णजी के बड़े ऋणी हैं और यदि वे कुछ दिन और जीवित रहते तो कदाचित् "प्रस्तार प्रश्नोत्तरी" को पुस्तकाकार छपवा कर हिंदी का अधिक उपकार करते। लिखने की आवश्यकता नहीं है कि हम उनके और अध्यापक रामदासजी गौड़ के अत्यन्त अनुग्रहीत हैं। श्री भानु कविजी के "छन्दःप्रभाकर" ग्रन्थ से भी बड़ी सहायता मिली है, इसलिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

प्रथमा के परीक्षार्थियों को द्वितीय भाग के अन्तर्गत नष्ट उद्दिष्ट, मेरु, मर्कटी, पताका तथा मात्रा का साधारण प्रस्तार, इन विषयों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, पर मध्यमा के विद्यार्थियों को संपूर्ण पुस्तक पढ़ना चाहिये।

इस पुस्तक संबंधी समस्त अधिकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति को सादर समर्पित हैं।

पानवाली गली, लखनऊ
माघ शुक्ल ५, सं० १९७४

पुत्तनलाल विद्यार्थी।
लक्ष्मीधर शुक्ल।

सरल पिंगल

गुरु लघु

पिंगल में सबसे पहिली बात गुरु लघु विचार है। अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर) लघु तथा आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ (दीर्घ स्वर) ये गुरु हैं। व्यंजनों का लघु तथा गुरु होना उनके साथ मिले हुए स्वर पर निर्भर है। अनुस्वार और विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु हैं। यथा क लघु है; का, कं, कः गुरु हैं। संयुक्त व्यंजन के पहिले का वर्ण बहुधा गुरु होता है।

यदि पढ़ने में संयुक्त व्यंजन से पहिले लघु वर्ण पर ज़ोर पड़े तो वह गुरु माना जाता है नहीं तो लघु ही रहता है। जैसे, 'धर्म' शब्द के उच्चारण में 'ध' पर ज़ोर पड़ता है इस कारण 'ध' दीर्घ है परन्तु 'तुम्हारा' शब्द के उच्चारण में 'तु' पर ज़ोर नहीं पड़ता है इस कारण 'तु' ह्रस्व है।

आज कल चंद्रबिन्दु (ँ) के स्थान पर भी बहुधा अनुस्वार का प्रयोग होता है। ऐसे स्थानों पर अनुस्वारयुक्त अक्षर सदा दीर्घ नहीं होता। चंद्रबिंदु (ँ) का कार्य स्वर को अनुनासिक (नाक से बोला जाने वाला) बनाना है उसके कारण स्वर के गुरु लघु होने में कोई भेद नहीं पड़ता।

उदाहरण—

प्रचलित रूप	ठीक रूप	लघु या गुरु
हंसना	हँसना	हं या हँ = लघु
फांसना	फाँसना	फां या फाँ = गुरु

'ह' और 'फ' अपने स्वर के अनुसार ह्रस्व और दीर्घ रहे। अनुस्वार (चंद्रबिंदु) ने उनके लघुत्व या दीर्घत्व पर कुछ प्रभाव नहीं डाला।

पदान्त का लघु वर्ण कभी कभी गुरु मान लिया जाता है परंतु ऐसा अधिकतर संस्कृत में ही होता है।

उदाहरण—'प्रारभ्य चोत्तम जना न परित्यजंति' इसमें अंत का 'ति' ह्रस्व होने पर भी दीर्घ माना गया है।

चिह्न

गुरु और लघु लिखने के लिये बहुधा चिह्नों से काम लिया जाता है। गुरु के लिये एक लहरदार रेखा (ऽ) और लघु के लिये एक सीधी रेखा (।) लिखी जाती है। यथा एक गुरु और एक लघु को इस भांति (ऽ।) लिखेंगे। गुरु के लिये 'ग' और लघु के लिये 'ल' भी लिखते हैं।

उदाहरण—सत—सीता—सीत—सती

सत	सीता	सीत	सती
।।	ऽऽ	ऽ।	।ऽ
लल	गग	गल	लग

मात्रा

गुरु और लघु के हिसाब से अक्षरों की मात्रायें नियत की गई हैं। लघु अक्षर की एक और गुरु की दो मात्रायें

होती हैं, यथा गरिष्ठ शब्द में ग ह्रस्व रि दीर्घ (संयुक्त व्यंजन ष्ठ के पहिले होने के कारण) और ष्ठ ह्रस्व है अतएव गरिष्ठ में १+२+१=४ मात्रायें हुईं।

दबा हुआ उच्चारण होने से गुरु वर्ण भी लघु ही माना जाता है। वर्ण का स्वाभाविक उच्चारण होने पर गुरु तथा दबा हुआ उच्चारण होने पर लघु होता है।

उदाहरण—अब मोहिं भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरि कृपा मिलैं नहिं संता॥

इसमें मो का उच्चारण दबा हुआ होता है अतः वह लघु माना जावेगा और उसकी १ मात्रा गिनी जावेगी।

गण

तीन अक्षरों के समूह को गण कहते हैं। आदि, मध्य और अंत अक्षरों के गुरु लघु के विचार से गणों के आठ भेद हैं जो नीचे लिखे सूत्र से सहज ही में याद हो जावेंगे।

'यमाताराजभानसलगम्'

नाम

य (यगण) मा (मगण) ता (तगण) रा (रगण) ज (जगण) भा (भगण) न (नगण) और स (सगण) ये आठ गण हैं। ल लघु के लिये और ग गुरु के लिये हैं।

पहिचान

जिस गण को जानना हो ऊपर के सूत्र में उसी अक्षर के साथ आगे के दो और अक्षर मिलाने से वह गण बन जावेगा। जैसे यगण को पहिचानने के लिये ऊपर के सूत्र में य के साथ उसके बाद के दो अक्षरों को मिलाया तो 'यमाता' हुआ इसमें य लघु और मा व ता गुरु हैं, अतः आदि लघु, मध्य गुरु और अन्त गुरु का (।ऽऽ) यगण हुआ। इसी प्रकार सगण जानने के लिये स के साथ आगे के दो अक्षर मिलाने से सलगम् हुआ अर्थात् आदि लघु, मध्य लघु, अन्त गुरु का (।।ऽ) सगण हुआ।

देवता और फल

प्रत्येक गण के भिन्न भिन्न देवता और फल होते हैं और उन्हीं के अनुसार गण शुभ या अशुभ माना जाता है।

नीचे हम एक श्लोक, दो दोहे और एक गीतिका छन्द लिखते हैं। इनमें पहिले गण का नाम फिर उसका देवता और फल दिया है, रुचि के अनुसार इन तीन में से किसी एक को याद कर लेना चाहिये।

(१) मो भूमिः श्रियमातनोति य जलं वृद्धिं रचाग्निर्मृतिं,
सो वायुः परदेशदूरगमनं तव्योम शून्यं फलं।
जः सूर्यो रुजमाददाति विपुलं भेन्दुर्यशो निर्मलं,
नो नाकश्च सुखप्रदः फलमिदं प्राहुर्गणानां बुधाः।

(२) मगण भूमि लक्ष्मी य जल, पावे आयु विशेस ।
र। पावक ता फल जलन, सगण वायु परदेस ॥ १ ॥
तगण व्योम है शून्य फल, जगण भानु रुज होय ।
नगण स्वर्ग सुखप्रद भ शशि, देत यशहि है सोय ॥ २ ॥

(३) मगण पृथ्वी तासु फल श्री, यगण जल आयु प्रदं ।
रगण पावक दाह ता फल, सगण वायु विदेशदं ।
तगण व्योम तु शून्य फलयुत, जगण आदित रुज फलं ।
नगण स्वर्ग सदा सुखप्रद, भ शशि देवै यश कलं ।

नीचे के फलक में गणों के लक्षण, देवता, फल तथा उनका शुभ अशुभ होना लिखा है ।

गण का नाम	रूप	उदाहरण	देवता	फल	शुभ या अशुभ
१—यगण	।SS	भराता	जल	आयु	शुभ
२—मगण	SSS	भारैती	पृथ्वी	लक्ष्मी	"
३—भगण	S।।	भारत	चन्द्रमा	यश	"
४—नगण	।।।	भरत	स्वर्ग	सुख	"
५—जगण	।S।	बरात	सूर्य	रोग	अशुभ
६—रगण	S।S	भारती	अग्नि	दाह	"
७—सगण	।।S	भरती	वायु	विदेश	"
८—तगण	SS।	भारैत	आकाश	शून्य	"

शुभाशुभ अक्षर

काव्य में अक्षरों के शुभाशुभ पर भी ध्यान रक्खा जाता है। स्वर सभी शुभ हैं, व्यञ्जनों में शुभ और अशुभ नीचे लिखे अनुसार हैं :—

शुभ

क, ख, ग, घ, च, छ, ज, ड, द, ध, न, य, श, स, क्ष,

अशुभ

ङ, झ, ञ, ट, ठ, ढ, ण, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष, ह

अशुभ अक्षरों में भी झ, ह, र, भ, और ष, ये पांच अक्षर बहुत ही दूषित हैं। ये दग्धाक्षर कहलाते हैं। पद्य के आदि में इनका होना महान् दोष समझा जाता है।

दोष निवारण

छन्द के आदि में दूषित गण अथवा अक्षर रहने से छन्द दूषित समझा जाता है परन्तु यदि छन्द का पहिला शब्द देवता संम्बन्धी वा मंगलावाची हो तो फिर दोष मिट जाता है। दग्धाक्षर का दोष अक्षर को दीर्घ कर देने से भी जाता रहता है जैसे यदि छन्द में पहिला अक्षर झ हुआ तो दोष है परंतु झा होना दोष नहीं।

छन्द

परिभाषा

मात्रा, वर्णरचना, विराम, गति और चरणान्त सम्बन्धी नियम जिस कविता में पाये जायँ उसे छन्द कहते हैं।

प्रत्येक छन्द के चार भाग होते हैं जिनमें से प्रत्येक को पद, पाद अथवा चरण कहते हैं। अतः प्रत्येक छन्द में चार पद, पाद अथवा चरण होते हैं।

जो छन्द दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं, यथा दोहा, सोरठा आदि, उनकी प्रत्येक पंक्ति को दल कहते हैं।

भेद

छन्द दो प्रकार के होते हैं (१) मात्रिक अथवा जाति छन्द और (२) वर्णिक छन्द अथवा वर्णवृत्त।

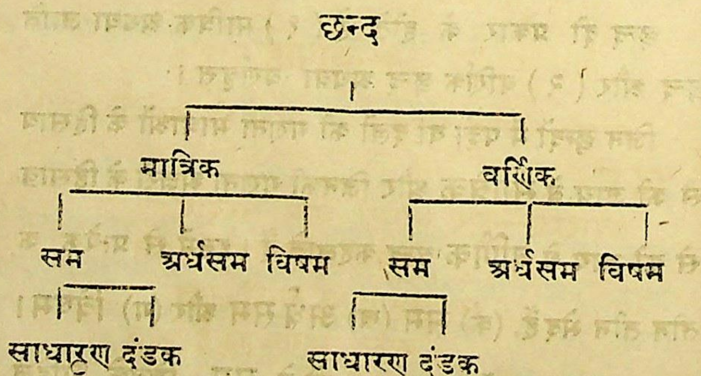
जिन छन्दों में पदों या दलों की गणना मात्राओं के हिसाब से की जाय वे मात्रिक और जिनकी गणना अक्षरों के हिसाब से की जाय वे वर्णिक छन्द कहलाते हैं। इनमें से प्रत्येक के तीन तीन भेद हैं, (क) सम (ख) अर्ध सम और (ग) विषम। जिन छन्दों के चारों पद एक से हों वे सम, जिनके पहिले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद एक से हों वे

अर्ध सम और जिनके चारों पद भिन्न भिन्न हों वे विषम कहलाते हैं।

सम के दो भेद हैं (१) साधारण और (२) दंडक।

जिन मात्रिक समों के प्रत्येक चरण में ३२ या इससे कम मात्रायें होती हैं वे साधारण और ३२ से अधिक मात्रा वाले दंडक कहलाते हैं। इसी भांति जिन वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण में २६ या इसके कम अक्षर होते हैं वे साधारण और उससे अधिक अक्षर वाले दंडक कहलाते हैं।

नीचे छंदों का भेद सूचक फलक दिया है।



यति

बहुधा छन्दों का प्रत्येक पद एक वा अधिक स्थानों पर टूटता है। जैसे 'भे प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशिल्या हितकारी'। यह पद 'कृपाला' व 'दयाला' पर टूटता है। इसी टूटने (अथवा पढ़ते समय जिह्वा रुकने) के स्थान को यति, विश्राम अथवा विराम कहते हैं। जैसे ऊपर के पद में यह कहा जायगा कि इसमें 'कृपाला' और 'दयाला' के बाद, या प्रारम्भ से १० और ८ मात्राओं पर यति है।

मात्रिक छन्द सम

१—चौपाई

लक्षण—प्रत्येक चरण में १५ मात्रा हों, अन्त में गुरु और लघु हों।

उदाहरण—हम चौधरी डोम सरदार,
अमल हमारा दोनों पार।
सब मसान पर हमरा राज,
कफ़न मांगने का है काज॥

विशेष—चौपाई और चौपाई के पहिले दो तथा अंतिम दो चरणों का नाम अर्द्धाली है।

२—चौपाई रूप चौपाई, अथवा पादा कुलक

लक्षण—प्रत्येक चरण में १६ मात्रा हों, अन्त में जगण अथवा तगण न पड़े।

उदाहरण—सब गुण रहित कुकवि कृत बानी,
राम नाम यश अंकित जानी।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही,
मधुकर सरिस संत गुण ग्राही॥

३—पद्धरी, पद्धटिका, प्रज्वलय अथवा प्रज्वलिया

लक्षण—प्रत्येक चरण में १६ मात्रा हों, अंत में जगण हो।

उदाहरण—तुम अमल अनन्त अनादि देव,
नहिं वेद बखानत सकल भेव।
सबको समान नहिं बैर नेह,
निज भक्तन कारण धरत देह॥

विशेष—किसी किसी के मत से चार चार मात्राओं पर यति होना चाहिये।

४—लावनी

लक्षण—प्रत्येक चरण में २, १० व १० के विश्राम से २२ मात्रायें हों, अंत में गुरु हो।

उदा०—अपनी अपनी करतूत सबै दिखराओ।
लरि लरि अरि सैनहिं हततें तुरत भगाओ॥

जड़ सों भारत ते इनके नाम मिटाओ।
फिर आर्य स्वजस की नदी पवित्र बहाओ॥
करिकै अब विजय मिटाओ जग परिहासा।
अब भये भानुकुल भानु प्रताप प्रकासा॥

विशेष—गाने वाले इसे मरहठी ख्याल भी कहते हैं। इसमें साधारणतः ६ पद होते हैं, जिनमें पहिले चार सम तुकांत होते हैं। अंतिम टेक वा स्थायी पद होता है।

५—रोला

लक्षण—प्रत्येक चरण में ११ व १३ के विश्राम से २४ मात्रा हों। किसी किसी कवि के मत से इसके अंत में दो गुरु होना आवश्यक है।

उदा०—रामकृष्ण गोविंद, भजे सुख होत घनेरो।
इहां प्रमोद लहन्त, अन्त बैकुंठ बसेरो॥
मृगतृष्णा सो विषै, तुच्छ अति बंधन जीको।
तातै छांड़ि कुसंग, गहो शरणो हरिही को॥

६—उल्लाला अथवा चन्द्रमणि (अ)

लक्षण—प्रत्येक चरण में १३ मात्रा हों।

उदाहरण—हिन्दी के उद्धार हित,
कष्ट अनेकन जिन सहे।
भारतेन्दु हरिचंद की,
उज्ज्वल कीर्त्ति सदा रहे॥

(इ)

लक्षण—पहिले और तीसरे पद में १५ और दूसरे व चौथे पद में १३ मात्रा हों।

उदाहरण—कह कवित कहा विन रुचिर वीत,
मति सु कहा बिनहीं विरति।
कह विरतिउ लाल गुपाल के,
चरननि होय जु प्रीति अति॥

विशेष—उल्लाला का यह भेद मात्रिक अर्धसम है।

७—गीतिका

लक्षण—१४ और १२ के विश्राम से २६ मात्रा हों, अंत में लघु गुरु हों।

उदाहरण—योग यज्ञ अनेक कर्मन,
करि तुम्हैं सब ध्यावहीं।
होय जाको भाव तैसो,
तुमहिं ते फल पावहीं॥
अति अगाध अपार तुव गति,
पार काहू नहि लह्यो।
शंभु शेश गणेश विधना,
नेति निगमन हू कह्यो॥

८—दोवै, सार अथवा नरेन्द्र ललित पद

लक्षण—१६ और १२ के विश्राम से २८ मात्रा हों, अन्त में दो गुरु हों।

उदाहरण—प्रगटहु रविकुल-रवि निशि बीती,
प्रजा कमल गन फूले ।
मन्द परे तारा रिपुगन सम,
जन भय तम उनमूले ॥
नसे चोर लंपट खल लखि जग,
तुव प्रताप प्रगटायो ।
मागध वंदी सूत चिरैयन,
मिलि कल रोर मचायो ॥

९—चवपैया

लक्षण—प्रत्येक चरण में १०,८ व १२ के विश्राम से ३० मात्रा हों, अंत में एक सगण और एक गुरु हों ।

उदाहरण—भे प्रगट कृपाला, दीन दयाला,
कौशिल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा,
निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला, नयन बिशाला,
शोभासिंधु खरारी ॥

१०—दुर्मिल (अ)

लक्षण—प्रत्येक चरण में १०,८ व १४ की यति से ३२ मात्रा हों, अन्त में सगण और दो गुरु हों ।

उदाहरण—जै जय रघुनंदन, असुर निहंडन,
कुल मंडन यश के धारी।
जनमन सुखकारी, विपिन बिहारी,
नारि अहिल्यहिं सी तारी॥
शरणागत आयो, ताहि बचायो,
राज बिभीषन को दीन्हो।
दसकंध बिदारो, पंथ सुधारो,
काज सुरन जन को कीन्हो॥

(इ)

लक्षण—प्रत्येक चरण में ८ सगण हों।

उदा०—सबसों करि नेह भजौ रघुनंदन,
राजत हीरन माल हिये।
नव नील वपू कल पीत झँगा,
झलकैं अलकैं घुंघुरारि लिये।
अरविंद समान न रूप मरंद,
अनंदित लोचन भृंग पिये।
हिद में न बस्यो अस दुर्मिल बालक,
तो जग में फल कौन जिये॥

विशेष—दुर्मिल का यह भेद वर्णवृत्त में है।

११—झूलना (अ)

प्रत्येक चरण के ७, ७, ७ और ५ के विश्राम से २६ मात्रा हों अंत में, गुरु लघु हों।

उदाहरण—हरि राम विभु, पावन परम,
गोकुल बसत, मतिमान।
छवि धाम सुर, मारन असुर,
मूरति :मयन, बलवान।
यदुवंश प्रभु, तारण तरण,
करुणायतन, गुनमान॥
भल जान कहं, पछिताय फिर,
क्यों रहत हो, अनजान॥

विशेष—हम्मीर हठ में जो झूलना छन्द आया है वैसा हमें किसी हिन्दी के पिङ्गल ग्रन्थ में नहीं मिला।

(इ)

लक्षण—प्रत्येक चरण में १०, १०, १०, व ७ के विश्राम से ३७ मात्रा हों, अन्त में यगण हो।

उदा०—जयति हिम बालिका, असुरकुल घालिका,
कालिका मालिका सुरन हेतू।
छमुख हेरम्ब की, अम्ब जगदम्बिके,
प्राण प्रिय बल्लभा वृषभ केतू॥
सिद्धि औ ऋद्धि सुख, खान धन धान्य की,
दानि शुभगांगना गुननिकेतू।
भुक्ति मुक्ति प्रदे, वाणि महारानी,
प्रणत ईश्वरी कहँ शरण दे तू॥

विशेष—झूलना का यह भेद मात्रिक दंडक छंद है।

२

१२—हरिगीतिका

लक्षण—प्रत्येक चरण में १६, १२ के विश्राम से २८ मात्रा हों, अंत में लघु गुरु हों।

उदाहरण—मुनि धीर योगी सिद्ध संतत,
विमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुराण आगम,
जासु कीरति गावहीं॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन,
निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भक्त हित,
निज तंत्र नित रघुकुलमनी॥

विशेष—रामायण में यह छंद बहुत आया है।

१३—दंडकला

प्रत्येक चरण में १०,८ व १४ के विश्राम से ३२ मात्रा हों अंत में सगण हो। किसी किसी के मत से अंत में केवल गुरु होना चाहिये।

उदाहरण—फल फूलनि ल्यावैं, हरिहिं सुनावैं,
है या लायक भोगनि की।
अस सब गुण पूरी, स्वादनि रूरी,
हरनि अनेकन रोगनि की॥
हँसि लेहिं कृपानिधि, लखि योगी विधि,
निन्दहिं अपने योगन की।
नभ ते सुर चाहैं, भानु सराहैं,
बारन दंडक लोगन की॥

१४—त्रिभंगी

लक्षण—प्रत्येक चरण में १०, ८, ८ और ६ के विश्राम से ३२ मात्रा हों, आदि में जगण का निषेध है, अंत में गुरु हो। इसके प्रत्येक चरण में प्रायः ३ यमक होते हैं।

उदा०—सुर काज सँवारन, अधम उधारन,
दैत्य विदारन, टेक धरे।
प्रगटे गोकुल में, हरि छिन छिन में,
नन्द हिये में, मोद भरे॥
धिनताक धिनाधिन, ताक धिनाधिन,
ताक धिनाधिन ताक धिना।
नाचत जसुदा को, लखि मन छाको,
तजत न ताको, एक छिना॥

मात्रिक छन्द, अर्धसम

१५—बरवै, ध्रुव अथवा कुरंग

लक्षण—विषम चरणों (प्रथम व तृतीय) में १२ तथा सम (द्वितीय व चतुर्थ) चरणों में ७ मात्रा हों, अन्त में जगण हो।

उदा०—बाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित विहार॥

१६—दोहा

लक्षण—विषम चरणों में १३ और सम चरणों में ११ मात्रा हों। पहिले व तीसरे चरण के आदि में जगण न हो। अंत में लघु हो।

उदा०—वारि मथे वरु होइ घृत, सिकता ते वरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल॥

१७—सोरठा

लक्षण—दोहे का उलटा। अर्थात् सम चरणों में १३ और विषम में ११ मात्रा हों। सम चरणों के आदि में जगण न हो।

उदा०-बंदौ विधि पद रेनु, भव सागर जिन कीन्ह यह।
सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष वारुणी॥

मात्रिक छन्द, विषम

१८—छप्पय

लक्षण—६ पद हों। इनमें पहिले चार पद रोला के और अंतिम दो पद उल्लाला के हों।

उदा०—प्रभो! पाप का पुञ्ज, कलह का कुञ्ज दूर हो।
अवनी तल उत्साह, और सद्धर्म पूर हो॥
रहे न निर्धन दीन, न भारत विषय चूर हो।
रहे सदा निर्भीक, यशी रणवीर शूर हो॥
हे विश्वंभर घर घर यहां, व्रतियों के उद्धार हों।
उद्धार धर्म का हम करें, सच्चे आर्यकुमार हों॥

१९—कुण्डलिया

लक्षण—६ पद हों। प्रत्येक पद में २४ मात्रायें हों। पहिले दो पदों में १३ व शेष चार में ११ पर यति हो। एक दोहे के

बाद रोला छंद जोड़ने से कुण्डलिया बनती है। इसमें द्वितीय पद का उत्तरार्ध, तृतीय पद का पूर्वार्ध होता है।

उदा०—नैया मोरी तनिक सी, बोझी पाथर भार।
चहुंदिशि अति भौंरें उठत, केवट है मतवार॥
केवट है मतवार, नाव मझधारै आनी।
आंधी चलत प्रचंड, ताहु पर बरसत पानी॥
कह गिरधर कविराय, नाथ हौ तुमहिं खेवैया।
उठै दया को डांड, घाट पर आवै नैया॥

वर्णिक छन्द, सम

२०—तोटक

लक्षण—प्रत्येक चरण में चार सगण हों।

उदाहरण—जय राम सदा सुख धाम हरे।
रघुनायक सायक चाप धरे॥
भव वारण दारण सिंह प्रभो।
गुणसागर नागर नाथ विभो॥

२१—मोतीदाम

लक्षण—प्रत्येक चरण में चार जगण हों।

उदाहरण—ऊँचौ रघुनाथ धरे धनु हाथ।
विराजत सानुज जानकि साथ॥
सदा जिनके सुठि आठहु याम।
विराजत कंठ सुमोतिय दाम॥

२२—भुजंगप्रयात

लक्षण—प्रत्येक चरण में चार यगण हों।

उदाहरण—नमामीशमीशान निर्वाण रूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं॥

विशेष—निम्नलिखित एक दूसरा उदाहरण है—भुजङ्ग प्रयातं भुजङ्गप्रयातं भुजङ्गप्रयातं भुजङ्गप्रयातं॥ इत्यादि।

२३—सवैया, मदिरा, उमा, अथवा दिवा

लक्षण—प्रत्येक चरण में ७ भगण और एक गुरु हो।

उदाहरण—भा सत गौरि गुसांइन को बर,
रामधनू दुइ खंड कियो।
मालिन को जयमाल गुहो,
हरिके हिय जानकि मेलि दियो।
रावन की उतरी मदिरा,
चुप चाप पयान जु लंक कियो।
राम बरी सिय मोद भरी,
नभ में सुर जै जयकार कियो॥

२४—मालती सवैया, मत्तगयन्द

लक्षण—प्रत्येक चरण में ७ भगण और दो गुरु हों।

उदाहरण—भासत गंग न तो सम आन,
कहूं जग में मम पाप हरैया।

बैठ रहे मनु देव सबै,
तजि तोपर तारन भारहिं मैया।
या कलि में इक तूहि सदा,
जन की भवपार लगावत नैया।
है तु इकै हरि अम्ब अरी,
अवमत्त गयंदहिं नास करैया॥

वर्णिक छन्द, दंडक

२५—कवित्त मनहर

लक्षण—प्रत्येक चरण में ३१ अक्षर हों। अन्त का अक्षर गुरु हो।

उदा०—आनंद के कंद जग ज्यावन जगतवंद,
दशरथनन्द के निबाहई निवहिये।
कहै पदमाकर पवित्र पन पालिबे को,
चोर चक्रपाणि के चरित्रन को चहिये॥
अवधविहारी के विनोदन में बीथि बीथि,
गीध मुंह गीधे के गुणानुवाद गहिये।
रैन दिन आठो जाम राम राम राम राम,
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये॥

विशेष

छन्द अनेक प्रकार के हैं और वर्णों, मात्राओं तथा यति के स्थान में थोड़ा थोड़ा सा ही भेद पड़ जाने से, जो साधारण कानों व जिह्वा को कुछ भी ज्ञात नहीं होता, कवियों ने एक ही छन्द के कई कई भेद किये हैं। जैसे मात्रा-समक, विद्युन्माला आदि चौपाई के ही रूपान्तर मात्र हैं।

हमने केवल कुछ मुख्य मुख्य छंद ऊपर लिखे हैं।

प्रस्तार प्रश्नोत्तरी

प्रस्तार की परिभाषा

प्रश्न—प्रस्तार किसे कहते हैं ?

उत्तर—लघु गुरु होने के कारण एक अक्षर के छंद के दो भेद हो सकते हैं जैसे, म ।, मा ऽ, और दो अक्षर के छन्द के चार भेद हो सकते हैं जैसे, रामा ऽऽ, रमा ।ऽ, राम ऽ।, रम ।।, । इसी प्रकार यह बतलाना कि किसी नियत वर्ण संख्या के छंद के, लघु, गुरु विपर्य्यय होने से, कौन कौन से रूप हो सकते हैं वर्ण प्रस्तार कहलाता है।

दो मात्रा के छंद के दो भेद होते हैं, जैसे ।। तथा ऽ, मन और मा। तीन मात्रा के छन्द के तीन भेद होते हैं, जैसे, ।ऽ, ऽ।, ।।।, रमा राम और रमण। इसी प्रकार किसी नियत

मात्रावाले छन्द के, गुरु लघु के अन्तरानुसार, सब रूप बतलाना **मात्रा प्रस्तार** करना कहलाता है।

प्रश्न—प्रस्तार के कितने अंग हैं ?

उत्तर—वर्ण प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, पताका और मर्कटी।

कुछ लोगों के मत से प्रस्तार में अंगों का नाम प्रत्यय है।

वर्ण प्रस्तार

प्रश्न—वर्ण प्रस्तार की रीति बतलाओ।

उत्तर—जितने वर्ण का प्रस्तार करना हो उतने ही गुरु चिह्न एक पंक्ति में लिखो, यह प्रथम रूप है। फिर सब से बायें ओर के गुरु के तले लघु लिखो और दाहिनी ओर शेष सब चिह्न ज्यों के त्यों उतार लो, यह दूसरा रूप है। फिर दूसरे रूप के तले भी सब से बाएँ गुरु के तले लघु लिख कर दाहिनी ओर के सब चिह्न ज्यों के त्यों उतारो और इस लघु के बाएँ ओर सब गुरु लिखकर सब पंक्ति पूरी करो। इसी प्रकार रूप लिखते जाओ, जब सब लघु हो जायँ तब जानो कि प्रस्तार पूरा हो गया। जैसे—

दो वर्ण का प्रस्तार [चार रूप]

१. SS, २. IS, ३. SI, ४. II

तीन वर्ण का प्रस्तार [आठ रूप]

१. SSS मगण, २. ISS यगण, ३. SIS रगण, ४. IIS सगण, ५. SSI तगण, ६. ISI जगण, ७. SII भगण, ८. III नगण।

पांच वर्ण का प्रस्तार [३२ रूप]

१. ऽऽऽऽऽ, १२. ।।ऽ।ऽ, २३. ऽ।।ऽ।,
२. ।ऽऽऽऽ, १३. ऽऽ।।ऽ, २४. ।।।ऽ।,
३. ऽ।ऽऽऽ, १४. ।ऽ।।ऽ, २५. ऽऽऽ।।,
४. ।।ऽऽऽ, १५. ऽ।।।ऽ, २६. ।ऽऽ।।,
५. ऽऽ।ऽऽ, १६. ।।।।ऽ, २७. ऽ।ऽ।।,
६. ।ऽ।ऽऽ, १७. ऽऽऽऽ।, २८. ।।ऽ।।,
७. ऽ।।ऽऽ, १८. ।ऽऽऽ।, २९. ऽऽ।।।,
८. ।।।ऽऽ, १९. ऽ।ऽऽ।, ३०. ।ऽ।।।,
९. ऽऽऽ।ऽ, २०. ।।ऽऽ।, ३१. ऽ।।।।,
१०. ।ऽऽ।ऽ, २१. ऽऽ।ऽ।, ३२. ।।।।।,
११. ऽ।ऽ।ऽ, २२. ।ऽ।ऽ।,

नष्ट

प्रश्न—नष्ट प्रश्न किसको कहते हैं ?

उत्तर—यदि कोई पूछे कि इतने वर्ण के प्रस्तार में अमुक भेद कैसा होगा, तो यह नष्ट प्रश्न है। जैसे ४ वर्ण के प्रस्तार में सातवें भेद का क्या रूप होगा, अथवा ५ वर्ण के प्रस्तार में सोलहवां भेद बतलाओ, ये नष्ट प्रश्न हैं। इनका उत्तर नष्ट विचार से दिया जाता है।

प्रश्न—नष्ट विचार की रीति बतलाओ और उदाहरण दो।

उत्तर—जो भेद पूछा जावे उस अंक को देखो कि सम है वा विषमम् अर्थात् पूरा है वा ऊना। यदि सम है तो पहिले

लघु का रूप [।] लिखो, यदि विषम है तो गुरु का चिह्न [ऽ] लिखो। तत्पश्चात् उस अंक को आधा करो। परन्तु यदि वह विषम है तो एक जोड़कर आधा किया जावेगा। यदि आधा करने पर विषम अंक आवै तो गुरु, और सम आवे तो लघु लिखो। इसी प्रकार बार बार आधा करते चले जाओ। विषम पाकर गुरु और सम पाकर लघु लिखते जाओ जब तक वर्ण की संख्या पूरी न हो जाय।

विषम पाय गुरु, सम लघु लैये।
आधी करि करि नष्ट बतैये ॥

इस चौपाई को स्मरण रखने से सुगमता होगी।

उदाहरण—जैसे कोई पूंछे कि पांच वर्ण के प्रस्तार में ग्यारहवां भेद कैसा है? तो ११ विषम अङ्क है इसलिए पहिले गुरु लिखा (ऽ)। फिर ग्यारह को आधा करना चाहिये, परन्तु ११ विषम है अतएव १ जोड़ कर बारह का आधा किया तो ६ पाया, सो सम अंक है, इसलिये लघु (।) लिखा। फिर ६ को आधा किया तो ३ मिला, सो विषम अंक है, इसलिये गुरु (ऽ) लिखा। फिर ३ में १ जोड़ कर चार का आधा किया, तो २ मिला, सो सम है, इसलिये लघु (।) लिखा। फिर २ को आधा किया तो १ मिला, सो विषम है, इसलिये गुरु (ऽ) लिखा। पांच चिह्न पूरे हो गये, अतएव यह उत्तर हुआ 'ऽ।ऽ।ऽ'—देखो, पृष्ठ २४ पर ५ वर्ण के प्रस्तार में ग्यारहवां भेद।

दूसरा उदाहरण—४ वर्ण के प्रस्तार में छठा भेद बतलाओ। ६ सम है इसलिये लघु लिखा। ६ का आधा तीन

हुआ सो विषम है इसलिये गुरु लिखा। फिर १ जोड़कर चार का आधा किया २ मिला, सो सम है, इसलिये लघु लिखा। और दो को आधा किया तो १ विषम मिला जिससे गुरु लिखा। चारों वर्ण होगये, इसलिये उत्तर हुआ कि ४ वर्णों के प्रस्तार में छठवां रूप है '।ऽ।ऽ'।

प्रश्न—विविध संख्याओं के वर्ण प्रस्तारों में कोई समता आपस में होती है वा नहीं?

उत्तर—अवश्य होती है, और वह समता यह है कि प्रस्तार चाहे कितने ही वर्ण का हो, परन्तु क्रमानुकूल एक प्रस्तार का कोई भेद दूसरे प्रस्तार के उसी भेद के सदृश ही होगा। भिन्नता केवल यह होगी कि जिस प्रस्तार में वर्ण अधिक हैं उसमें अल्प वर्णवाले प्रस्तार से उतने ही अधिक चिह्न एक पंक्ति में होंगे। जैसे—

५ वर्ण के प्रस्तार में चौदहवां भेद ।ऽ।।ऽ
६ वर्ण के प्रस्तार में चौदहवां भेद ।ऽ।।ऽऽ
७ वर्ण के प्रस्तार में चौदहवां भेद ।ऽ।।ऽऽऽ
८ वर्ण के प्रस्तार में चौदहवां भेद ।ऽ।।ऽऽऽऽ

इससे स्पष्ट है कि प्रस्तार चाहे जितने वर्णों का हो, परन्तु क्रमानुसार प्रत्येक प्रस्तार में, विशिष्ट संख्यावाले जैसे सातवें सातवें, नवें नवें रूप, आदि की ओर से एक समान होते हैं। बाईं ओर पंक्ति का आदि है। इस समता को अधिक स्पष्ट करने के लिये हम ५,६,७,८,९,१०,११,१२, वर्ण के प्रस्तारों के सोलहवें रूप लिखते हैं। पाठक मिलान करके समझ लें।

रूप
-भेद

के
,४,८,
में १

अंक
। यह
स्तार

ोड़कर
ये लघु
जिससे
कि ४

समता

प्रस्तार
तार का
होगा ।
धिक हैं
वह एक

ऽ
ऽऽ
ऽऽऽ
का हो,
ख्यावाले
से एक
मता को
१२, वर्ण
न करके

५-	IIIIS	९-	IIIISSSSS
६-	IIIISS	१०-	IIIISSSSSS
७-	IIIISSS	११-	IIIISSSSSSS
८-	IIIISSSS	१२-	IIIISSSSSSSS

उद्दिष्ट

प्रश्न—उद्दिष्ट रीति किसको कहते हैं ?

उत्तर—किसी रूप के संबंध में यह बतलाना कि यह रूप इतने वर्ण के प्रस्तार में अमुक—चौथा, पांचवां इत्यादि—भेद है उद्दिष्ट रीति है।

प्रश्न—उद्दिष्ट रीति की विधि बतलाओ ?

उत्तर—प्रश्न वाले रूप को लिखकर उसके प्रति चिह्न के नीचे एक से लेकर दूने दूने अंक लिखो। इस प्रकार-१,२,४,८, १६। फिर लघु के नीचेवाले अंकों को जोड़ कर उसमें १ जोड़ दो, वही उत्तर है। उदाहरण अगले प्रश्न में है।

प्रश्न—बतलाओ कि 'SISIS' कौनसा भेद है ?

उत्तर—S I S I S
१ २ ४ ८ १६ } —अब लघु के तले वाले अंक जोड़े तो २+८=१० हुए, इसमें १ मिलाया तो ११ हुए। यह ग्यारहवें भेद का रूप है। देखो पेज २४ पांच वर्ण के प्रस्तार में ११वां भेद।

इकते दुगुन अंक लिखि जैये ।
जोड़ि लघुन को एक बढ़ैये ॥

इस चौपाई को याद करने से उद्दिष्ट करने में सुगमता होगी।

प्रश्न—'। ऽ ऽ।' कौनसा भेद है ?

उत्तर—$\left.\begin{matrix} । & ऽ & ऽ & । \\ १ & २ & ४ & ८ \end{matrix}\right\}$—१+८=९, ९+१=१०। दसवां भेद है।

प्रश्न—जो कोई पूछे कि इतने वर्ण के प्रस्तार में सब कितने भेद होते हैं तो कैसे बतलाओगे ?

उत्तर—जितने वर्ण का प्रस्तार हो उतने बार दो से लेकर दूने दूने अंक लिखो। अन्त में जो अंक हो वही संख्या है। जैसे कोई चार वर्ण के प्रस्तार में भेदों की समग्र संख्या पूछे, तो २, ४, ८, १६ तक चार बार दूने दूने अंक लिखे तो १६ उत्तर है। पांच वर्ण हों तो उत्तर ३२ है, ६ वर्ण हों तो ६४ इत्यादि।

प्रश्न—वर्ण प्रस्तार के भेदों की समग्र संख्या बतलाने की कोई और भी सुगम रीति है ?

उत्तर—हां, यह गुर है—

भेद संख्या $=२^{क}$, यहां 'क' वर्ण संख्या है।

उदाहरण आगे के प्रश्न में है।

प्रश्न—५ वर्ण के प्रस्तार में कितने भेद होंगे ?

उत्तर—भेद संख्या $=२^{५}=२\times२\times२\times२\times२=३२$।

इसी प्रकार ६ वर्ण के प्रस्तार में $२^{६}$, १५ वर्ण के प्रस्तार में $२^{१५}$ भेद होंगे।

मेरु

प्रश्न—मेरुचक्र बनाओ और उसके बनाने की विधि बतलाओ। यह भी बतलाओ कि प्रस्तार विषय में मेरु का क्या उपयोग है।

उत्तर— पांच वर्ण का मेरु

क १	ख १					
ग १	घ २	च १				
छ १	ज ३	झ ३	ट १			
ठ १	ड ४	ढ ६	त ४	थ १		
द १	ध ५	प १०	फ १०	ब ५	भ १	

यह पांच वर्ण का मेरु प्रस्तार है।

मेरुचक्र में अक्षर, क, ख, इत्यादि केवल पाठक को अंक जोड़ कर भरने की विधि स्पष्ट रीति से बतलाने के लिये लिखे गये हैं।

जितने वर्ण का मेरु बनाना हो उससे एक अधिक कोठे बनाओ, यह सब से नीचे के कोठे हुए। फिर उनसे संख्या में एक न्यून कर कोठे उनके ऊपर बनाओ, और इसी भांति कोठे बनाते जाओ। अन्त में सबसे ऊपर दो कोठे बनेंगे। जैसे—६ कोठों पर ५, ५ पर ४, ४ पर तीन, तीन पर दो कोठे होंगे। सब कोठे सम (एक ही परिमाण के) होना चाहिये, जिससे चक्र सुन्दर बने, और दो दो कोठों पर ऊपर वाला कोठा इस भांति बनाओ कि उसकी दाहिनी और बाईं भुजाएं नीचे वाले

कोठों के बीच में रहें। देखो चित्र ऊपर। अंक भरने की यह विधि है कि ऊपर के दोनों कोठों में तथा और अन्य सब पंक्तियों के दाहिने और बाएं छोर के कोठों में १ लिखो। फिर ऊपर की ओर से सूने कोठों को इस भांति भरना आरम्भ करो, कि प्रत्येक कोठे में वह अंक लिखो जो उसके ऊपर के दोनों कोठों के अंकों का जोड़ हो। जैसे 'क' 'ख' वाले कोठों का जोड़ 'घ' में, 'ग' 'घ' का जोड़ 'ज' में, 'घ' 'च' का जोड़ 'झ' में, 'छ' 'ज' का जोड़ 'ड' में, 'ज' 'झ' का जोड़ 'ढ' में लिखो, इत्यादि।

मेरु का उपयोग—यदि कोई पूंछे कि इतने वर्ण के प्रस्तार में कितने भेद हैं, और उनमें से कितने चतुर्गुरु कितने त्रिगुरु, इत्यादि हैं, तो विना प्रस्तार किये ही मेरु से इसका उत्तर मिल जाता है।

जैसे पांच वर्ण का प्रस्तार २४ पृष्ठ में दिया है, उसके देखने से विदित होता है कि पहले भेद में सब पांचों गुरु हैं, पांच भेदों में प्रत्येक में चार गुरु १ लघु हैं, १० भेद ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक में ३ गुरु २ लघु हैं, १० भेद ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक में २ गुरु ३ लघु हैं, ५ भेदों में प्रत्येक में १ गुरु ४ लघु हैं, और १ भेद ऐसा है जिसमें पांचो लघु हैं। यह ३२ भेदों का ब्योरा हुआ। यही ब्योरा मेरु से तुरन्त ही विदित हो जाता है। ऊपर लिखे हुए ५ वर्ण के मेरु की सब से नीचे वाली पंक्ति देखो।

जैसे ५ वर्ण का मेरु बनाया है, ऐसे ही न्यून या अधिक सब संख्याओं का मेरु बनता है।

नीचे ६ वर्ण का मेरु दिया है, इसे ५ वर्ण के मेरु से मिलाने से विदित होगा कि ऊपर की ५ पंक्तियां ५ वर्ण के मेरु की पंक्तियों के समान हैं। अस्तु, जिस प्रकार न्यून और अधिक वर्णों के प्रस्तारों के एक ही (८ वां, १० वां कोई) भेद बाईं ओर से समान होते हैं, इसी तरह मेरु की ऊपर की पंक्तियां समान होती हैं। तात्पर्य्य यह है, कि यदि ६ वर्ण का मेरु बनाने के बाद ७ वर्ण का मेरु बनाना हो तो पहले मेरु में केवल एक और पंक्ति सब से नीचे लिखना होगी। एक बात और भी है। ६ वर्णों के मेरु में ५, ४ आदि ६ से न्यून वर्णों का मेरु सम्मिलित है।

६ वर्ण का मेरु

(१) | १ | १ |
(२) | १ | २ | १ |
(३) | १ | ३ | ३ | १ |
(४) | १ | ४ | ६ | ४ | १ |
(५) | १ | ५ | १० | १० | ५ | १ |
(६) | १ | ६ | १५ | २० | १५ | ६ | १ |

मेरु से यह विदित हो जाता है कि इतने वर्ण के प्रस्तार के कितने भेद हैं और उनमें कितने द्विगुरु, त्रिगुरु, इत्यादि हैं। जैसे ४ वर्ण के प्रस्तार में सब १+४+६+४÷१=१६ भेद हैं, उनमें एक सर्व गुरु अर्थात् चतुर्गुरु, ४ त्रिगुरु, ६ द्विगुरु, ४ एकगुरु, और १ सर्वलघु होते हैं। ६ वर्ण के ऊपर लिखे हुए मेरु की चौथी पंक्ति देखो और फिर प्रस्तार करके जांचो।

गुरु और लघु इस प्रकार जाने जाते हैं, कि पहले सब गुरु, फिर क्रम से गुरु कम होते जाते हैं और लघु बढ़ते जाते हैं। अन्त में एक सर्वलघु होता है।

प्रश्न—यदि कोई पूँछे कि १० वा १५ वा २० वर्ण के प्रस्तार में कितने दसगुरु नवगुरु इत्यादि होंगे तो विना पूरा मेरुचक्र बनाये हुये कोई सरल विधि उत्तर देने की है वा नहीं ?

उत्तर—विना मेरुचक्र बनाये हुये भी जितने वर्ण की पंक्ति चाहो एकवारगी बन सकती है, जैसे पृष्ठ ३१ में ६ वर्ण के मेरु की ६ वर्ण वाली पंक्ति बनाना हो तो प्रथम दक्षिण हस्त की ओर से आरंभ करके १ से ६ तक गिनती लिखो और १ लिखो, इस प्रकार— १ ६ ५ ४ ३ २ १। फिर उसी पंक्ति के तले, बांई ओर से आरंभ करके, वही गिनती लिख आओ, परन्तु बांई ओर १ के तले कुछ न लिखो।

इस प्रकार— १ ६ ५ ४ ३ २ १
१ २ ३ ४ ५ ६

इसके पश्चात् १ को ज्यों का त्यों उतारो, यह पंक्ति का पहला अंक हुआ। अगले अंक इस तरह प्राप्त होंगे कि इस १ को ६ से गुनो और ६ के तलेवाले १ से भाग दो तो दूसरा अंक ६ प्राप्त होगा। फिर इस ६ को ऊपर की पंक्ति के अगले अंक ५ से गुणा दो और नीचे की पंक्ति के अगले अंक २ से भाग दो। १५ प्राप्त हुआ, जो मेरु की पंक्ति का तीसरा अंक है। इसी क्रम से पूरी पंक्ति तैयार कर लो। उत्तर यह हुआ—

१, ६, १५, २०, १५, ६, १

दूसरा उदाहरण— ८ वर्ण के मेरु में ८ वर्ण की पंक्ति कैसी होगी ?

उत्तर और विधि— १ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

$१, \frac{१ \times ८}{१} = ८, \frac{८ \times ७}{२} = २८, \frac{२८ \times ६}{३} = ५६, \frac{५६ \times ५}{४} = ७०,$

$\frac{७० \times ४}{५} = ५६, \frac{५६ \times ३}{६} = २८, \frac{२८ \times २}{७} = ८, \frac{८ \times १}{८} = १,$

पंक्ति— १, ८, २८, ५६, ७०, ५६, २८, ८, १.

पताका

प्रश्न—पताका चक्र बनाने की विधि बतलाओ। पताका चक्र का क्या उपयोग है ?

उत्तर—मेरुचक्र से तो इतना ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्ण के प्रस्तार में इतने पंचगुरु, चतुर्गुरु इत्यादि रूप होते हैं। परन्तु यह बात कि वह रूप प्रस्तार श्रेणी में कहां स्थित है, अर्थात् प्रथम वा द्वितीय वा तृतीय इत्यादि भेद है, पताका चक्र से जानी जाती है। जैसे मेरुचक्र से जाना गया कि ५ वर्ण के प्रस्तार में १ पंचगुरु, ५ चतुर्गुरु, १० त्रिगुरु, १० द्विगुरु, ५ एकगुरु, और १ सर्वलघु रूप होते हैं। अब यदि कोई पूंछे कि वह पांच चतुर्गुरु कौथे भेद हैं, तो पताका चक्र से उत्तर दिया जायगा कि " दूसरा, तीसरा, पांचवां, नवां

और सत्रहवां"। देखो पताका-चक्र और ५ वर्ण का प्रस्तार पृष्ठ २४। मेरु की एक पंक्ति का प्रस्तार पताका है। विधि यह है कि जितने वर्ण का पताका बनाना हो उतने वर्णवाली पंक्ति मेरुचक्र की लिखो। इसे हम 'क' पंक्ति कहेंगे। फिर खड़े कोठे बनाओ और 'क' पंक्ति के तले बांई ओर से १ से लेकर दूने दूने अंक लिखो। इसे 'ख' पंक्ति कहेंगे।

क	१	५	१०	१०	५	१
ख	१	२	४	८	१६	३२
	ग	घ	ङ	च	छ	ज

अब इस 'ख' पंक्ति के विविध अंकों का नाम हम 'ग' इत्यादि अक्षर रखते हैं, जिसमें खड़े कोठों को भरने की विधि बतलाने में सुगमता हो।

५ वर्ण का पताका चक्र

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

पहली बात यह है कि 'क' पंक्ति वाले १ के तले केवल एक ही अंक रहेगा, क्योंकि ५ वर्ण के प्रस्तार में एक ही पंचगुरु होता है। इसी तरह ५ के तले ५ अंक आवेंगे, क्योंकि ५ चतुर्गुरु होते हैं। इसी तरह पंक्ति के शेष अङ्कों से यह विदित होता है कि किस खड़ी पंक्ति में कितने अङ्क भरे जायँगे।

अङ्क भरने की विधि

पहले खड़े कोठे में तो एक लिखा ही है।

दूसरे खड़े कोठे में २ लिखा है, उसके तले ग+घ=३ लिखो, फिर उसके तले वही ३+घ=५ लिखो, फिर उसके तले वही ५+ङ=९ लिखो, फिर उसके तले वही ९+च=१७ लिखो। दूसरा कोठा हो गया।

नियम यह है कि जो अंक जोड़ने से मिले उसी को 'ग' से जोड़ो, इस जोड़ से जो अंक आवे उसे 'घ' से जोड़ो, फिर जो इस जोड़ से अङ्क आवे उसे 'ङ' से जोड़ो। इसी क्रम से जितने अङ्कों की आवश्यकता जिस कोठे में हो उतने अङ्क जो जोड़ से मिलते जावें भरो फिर दूसरे कोठे में अङ्क भरना आरम्भ करो। परन्तु एक आवश्यक बात स्मरण रखने योग्य यह है, कि जो अंक एक बार आ चुका हो वह पुनः नहीं लिखा जायगा, वरन् उसके आगे वाला अङ्क लिखा जायगा। और जब कभी इस प्रकार आया हुआ अंक छोड़ कर उसके आगे का अंक लिखा जायगा, तो जोड़ने का क्रम फिर 'ख' पंक्ति के आदि से, अर्थात् 'ग' से, आरम्भ हो जावेगा।

उक्त नियमों को स्मरण रख कर अब तीसरा कोठा भरो। तीसरे कोठे में ४ लिखा ही है। उसके तले २+४=६ लिखो, उसके तले ६+ग=७ लिखो, उसके तले वही ७+घ=६ लिखते, परन्तु ६ आ चुका है, इसलिये १० लिखो। नियमानुसार अब जोड़ने का क्रम फिर 'ग' से प्रारम्भ होगा। उस १० के तले वही १०+ग=११ लिखो, उसके तले ११+घ=१३ लिखो, उसके तले १३+ङ=१७ न लिख कर १८ लिखो, उसके तले १८+ग=१९ लिखो, उसके तले १९+घ=२१ लिखो, उसके तले २१+ङ=२५ लिखो। तीसरा कोठा हो गया।

चौथे कोठे में ८ लिखा ही है, उसके तले ८+४=१२ लिखो, और इस १२ को 'ग' से जोड़ो और उक्त नियमों के अनुकूल इस कोठे में भी १० अंक पूरे करो। और इसी प्रकार शेष सब कोठे भरो।

५ वर्ण का प्रस्तार देखने से विदित होता है कि उसमें १० त्रिगुरु रूप हैं, अर्थात् चौथा, छठवां, सातवां, दसवां ग्यारहवां, तेरहवां, अठारहवां, उन्नीसवां, इक्कीसवां, और पच्चीसवां। यही बात इस चक्र से विदित है।

पताकाचक्र को देखकर यह विदित हो जाता है कि चतुर्गुरु वाले, त्रिगुरु वाले, इत्यादि, रूप कौन कौन से स्थान में हैं। अब यदि कोई कहे कि वह रूप लिखो तो नष्ट रीति को काम में लाओ, यथा, ५ वर्ण के पताका से विदित

हुआ कि आठवां, बारहवां, चौदहवाँ, इत्यादि १० रूप द्विगुरु और हैं। नष्ट से उनके रूप ।।।ऽऽ, ।।ऽ।ऽ, ।ऽ।।ऽ, इत्यादि ज्ञात होते हैं।

मर्कटी

प्रश्न—नष्ट, मेरु और पताका, की विधि तथा उनका आपस का सम्बन्ध ज्ञात हुआ, अब मर्कटी की विधि और उसका उपयोग बतलाओ।

उत्तर—मर्कटी वह चक्र है जिससे प्रस्तार के वृत्त, भेद, मात्रा, वर्ण, गुरु, लघु की समग्र संख्या ज्ञात होती है। उसे प्रस्तार का गोशवारा कहना चाहिए। जैसे ३ वृत्त का प्रस्तार यह है—ऽऽऽ, ।ऽऽ, ऽ।ऽ, ।।ऽ, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।।, ।।।, तो गिनती से विदित है कि ३ वृत्त के प्रस्तार में ८ भेद, ३६ मात्रा, २४ वर्ण, १२ गुरु और १२ लघु हैं।

विधि

जितने वर्ण की मर्कटी बनाना हो उतने खड़े कोठे बनाओ और उनको काटते हुए ६ आड़े कोठे बनाओ। इनके आदि में वृत्त, भेद इत्यादि नाम लिख दो। यह ६ पंक्तियाँ इस व्याख्या में पहली दूसरी कही जायँगी।

१० वर्ण की मर्कटी

वृत्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	१०२४
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१३४४	३०७२	६९१२	१५३६०
वर्ण	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६	२०४८	४६०८	१०२४०
गुरु	१	४	१२	३२	८०	९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०

पहली पंक्ति में १, २ इत्यादि लिखो, दूसरी पंक्ति में २ से लेकर दूने दूने अंक २, ४, ८ इत्यादि लिखो। चौथी पंक्ति को पहली और दूसरी पंक्ति के अंकों को गुणा करके धरो। इस प्रकार—१ × २=२, २ × ४=८, ३ × ८=२४। चौथी पंक्ति के अङ्कों को आधा करके पांचवीं और छठवीं पंक्ति भरो। तीसरी पंक्ति में पांचवीं और चौथी के अंकों का जोड़ भरो। इस प्रकार—१ + २=३, ४ + ८=१२, १२ + २४=३६, इत्यादि।

प्रश्न—४ वर्ण के प्रस्तार में कितने वर्ण, मात्रा इत्यादि होंगे।

उत्तर—४ वृत्त, १६ भेद, ९६ मात्रा, ६४ वर्ण, ३२ गुरु और ३२ लघु।

एकावली मेरु

प्रश्न—वर्ण के एकावली मेरु की विधि बतलाओ।

उत्तर—सब से पहले दो कोठे आड़ी पंक्ति में; फिर उनके नीचे ३ कोठे, फिर उसके नीचे ४ कोठे, इसी क्रम से बनाते हुए बढ़ाओ। इस प्रकार कि प्रत्येक पंक्ति ऊपरवाली पंक्ति से एक कोठा भर दाहिनी ओर बढ़ी रहे और बाईं ओर सब पंक्तियां एक सीध में हों। देखो चक्र।

१ वर्ण	१ क	ख १				
२ "	१ ग	घ २	ङ १			
३ "	१ छ	ज ३	झ ३	ट १		
४ "	१ ठ	४ ड	६ ढ	४ त	थ १	
५ "	१	५	१०	१०	५	१

फिर बाईं ओर के सब कोठों में १ लिखो, और दाहिनी ओर भी सब कोठों में १ लिखो। फिर एक कोठे का अंक उसके बाईं ओर वाले कोठे के अंक में जोड़कर उसके तले वाले कोठे में लिखो, जैसे ख + क=घ, घ + ग=ज, च + घ=झ, इत्यादि।

वर्णखंड मेरु

प्रश्न—वर्णखंड मेरु की विधि बतलाओ।

उत्तर—वर्ण संख्या से एक अधिक कोष्ट आड़ी पंक्ति में बनाओ। उसके नीचे उससे एक कम कोठे बनाओ, इस प्रकार कि दाहिनी ओर ऊपरवाली पंक्ति एक कोठा भर अधिक बढ़ी रहे। उसके तले इसी प्रकार और कोठा बनाते जाओ जबतक सब से तले एक कोठा बने। देखो चक्र

	क १	ख १	ग १	घ १	१ य	१ ध
	च २	छ ३	ज ४	झ ५	६ प	
	ट ३	ठ ६	ड १०	फ १५		
	ढ ४	त १०	ब २०			
	थ ५	भ १५				
१	द ६					

सब से ऊपर की पंक्ति में प्रत्येक कोठे में १ लिखो और बाईं ओर खड़ी पंक्ति में भी १, २, ३, इत्यादि लिखो। और नैऋत्य कोने में १ लिखो, फिर कोठे इस भांति भरो कि एक कोठा और उसके नैऋत्य वाला कोठा इन दोनों के अंक जोड़-कर उस नैऋत्य वाले कोठे के पूर्व दिशावर्ती कोष्ट में रक्खो, जैसे ख + च=छ, ग + छ=ज, ठ + ढ=त, इत्यादि।

अब प्रति आड़ी पंक्ति के अन्त वाले अंक ध, प, फ, व, भ, द और कोने वाला १ यही ६ वर्ण के प्रस्तार में उत्तर है। तथा ५ वर्ण के प्रस्तार में य, झ, ड, त, थ, अर्थात् १, ५, १०, १०, ५, १, यही उत्तर हैं। इसी क्रम से सब जानो।

मात्रा प्रस्तार

प्रश्न—मात्रा प्रस्तार की रीति लिखो।

उत्तर—यह तो पाठक को ज्ञात ही हो चुका है कि एक मात्रा का चिह्न '।' है और दो मात्रा का चिह्न 'ऽ' है। जितनी मात्राओं का प्रस्तार करना हो उनको गुरु चिह्नों के द्वारा एक पंक्ति में लिखो। यदि मात्राओं की संख्या विषम हो तो १ मात्रा जो बचे उसका लघु चिह्न बाएं छोर में लिखो। हम इसी छोर को पंक्ति का आदि कहेंगे। फिर पंक्ति की आदि में जो गुरु चिह्न हो उसके तले लघु लिखो और उसके दाहिनी ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतारो, परन्तु बांई ओर गुरु चिह्न लिखकर मात्राओं की संख्या पूरी करो। यदि एक की कसर रहे तो छोर पर का चिह्न लघु करो जैसे सात मात्रा का प्रस्तार करना है तो '।ऽऽऽ' इस भांति प्रथम पंक्ति में लिखो।

फिर आदि वाले गुरु के तले लघु लिखा और दाहिनी ओर के दोनों चिह्न ज्यों के त्यों उतारे तो '।ऽऽ' इतनी पंक्ति बनी। अब दो मात्राओं की कसर है तो बाईं ओर 'ऽ' ऐसा चिह्न लिख दिया। यह दूसरी पंक्ति हो गयी। यथा।

ISSS (१)
SISS (२)

अब फिर आदि वाले गुरु के तले लघु लिखकर शेष तीनों चिह्न ज्यों के त्यों उतारे तो 'IISS' इतनी पंक्ति बनी। इसमें एक मात्रा की कसर है तो लघु चिह्न बाईं ओर लिख दिया। यथा

ISSS (१)
SISS (२)
IIISS (३)

इसी प्रकार प्रस्तार करते जाओ जब सब लघु हो जायँ तब जानो कि प्रस्तार पूरा हो गया।

७ मात्रा का प्रस्तार

(१) ISSS	(८) IIIIIS	(१५) SISII
(२) SISS	(९) SSSI	(१६) IIISII
(३) IIISS	(१०) IISSI	(१७) SSIII
(४) SSIS	(११) ISISI	(१८) IISIII
(५) IISIS	(१२) SIISI	(१९) ISIIII
(६) ISIIS	(१३) IIIISI	(२०) SIIIII
(७) SIIIS	(१४) ISSII	(२१) IIIIIII

४ मात्रा का प्रस्तार

(१) SS	(२) IIS	(३) ISI
(४) SII	(५) IIII	

प्रश्न—७ मात्रा के प्रस्तार में ग्यारहवां रूप कैसा होगा ?

उत्तर— I I I I I I I
१ २ ३ ५ ८ १३ २१

जितने मात्रा का प्रस्तार हो उतने अंक इस तरह लिखो कि बाईं ओर १ और २ से आरंभ करके, पहले दो अंकों १+२ का जोड़ तीसरा अंक ३, फिर पहले दो अंकों २+३ का जोड़ चौथा अंक ५, फिर ५+३=८ पांचवां अंक इत्यादि, इसी तरह ऊपर लिखे हुए ७ अंक मिले। इसी रीति से यह बढ़ाये भी जा सकते हैं।

अब २१ से ११ घटाये १० बचे, इस १० से १३ नहीं घटता तो ८ घटाये २ बचे, इस २ से ५ और ३ नहीं घटते तो २ घटाये शून्य बचा, तो घटने वाले अंक ८ और २ हैं इस लिये इनके ऊपर के लघु अपने दक्षिण दिशावर्त्ती लघु को लेकर गुरु हो गये। शेष सब लघु रहे तो परिणाम यह हुआ—

।　ऽ　।　ऽ　।

१ २ ३ ५ ८ १३ २१

इसलिये उत्तर हुआ '।ऽ।ऽ।'। ७ मात्रा के प्रस्तार में यह ११ वां भेद है।

प्रश्न—मात्रा उद्दिष्ट की रीति बतलाओ और उदाहरण दो।

उत्तर—प्रश्न वाले रूप के बराबर समग्र संख्या वाले अंक लिखो, इस तरह कि लघु चिह्नों के केवल ऊपर और गुरु चिह्नों के ऊपर भी नीचे भी; फिर गुरु के ऊपर के अंक जोड़ कर अन्त के अंक से घटाओ; जो बचे वही उत्तर है।

जैसे कोई प्रश्न करे कि '।ऽऽ।' यह कौन सा भेद है, तो इस रूप के ऊपर नीचे समग्र संख्या वाले अंक लिखे, जैसे—

१ २ ५ १३
। ऽ ऽ ।
३ ८

फिर गुरु चिह्नों के ऊपर के अंक जोड़े तो २+५=७ हुआ। इसे १३ में से घटाया ६ रहा, तो ६ ही उत्तर है। छठवां रूप है।

मात्रा मेरु

प्रश्न—मात्रा मेरु बनाने की रीति बतलाओ। मात्रा मेरु से क्या जाना जाता है?

उत्तर—मात्रा मेरु से यह जाना जाता है कि नियत संख्या के मात्रा प्रस्तार में कितने सर्व लघु, कितने एक गुरु, कितने द्विगुरु इत्यादि रूप होते हैं। उसके बनाने की विधि यह है कि—

जिस प्रकार वर्ण मेरु में कोठे बनाये जाते हैं, देखो पृष्ठ ३१, उसी भांति मात्रा मेरु के कोठे भी बनाओ, परन्तु मात्रा मेरु में कोठों की दोहरी पंक्ति बनती है। इन कोठों के बनाने का क्रम ऊपर से आरंभ करना चाहिये। सबसे ऊपर एक कोठा रहता है। देखो चक्र।

क, ख इत्यादि अक्षर रीति स्पष्ट करने के लिये लिखे गये हैं, जिससे पाठक जान लें कि अमुक कोष्ठ से अभिप्राय है।

१

१ क	१ ख
ग २	घ १

१ च	३ छ	ज १
३ झ	ट ४	ठ १

१ ड	६ ढ	५ त	थ १
द ४	ध १०	प ६	फ १

१	१०	१५	७	१
५	२०	२१	८	१

सब से ऊपर के कोठे में १ लिखो। यह तो विदित ही है कि १ मात्रा के प्रस्तार में १ ही भेद होगा। तत्पश्चात् जो दोहरी पंक्तियां हैं उनमें से प्रत्येक ऊपर वाली पंक्ति के आदि के कोठे में १ लिख दो और नीचे वाली पंक्तियों के आदि वाले कोठों में २, ३ इत्यादि लिख दो, और अंत के, अर्थात् दाहिनी ओर के छोरवाले, प्रत्येक कोठे में १ लिखो। अब शेष कोठे इस प्रकार भरो कि, ख+ग=छ, घ+छ=ट; छ+झ=ढ, ज+ट=त, ट+ढ=ध, अर्थात् पाठशाला के नक़्शों में जो दिशाओं का नियम होता है उसके अनुसार, एक कोठे का अंक और उसके नैऋत्य वाले कोठे का अंक जोड़कर उस नैऋत्य वाले कोठे में भरना चाहिये। जहां उस नैऋत्य वाले कोठे के तले दो कोठे हैं वहां दहिने कोठे से अभिप्राय है, जैसे 'ज' और 'ट' का जोड़ 'त' में भरा जायगा 'ढ' में नहीं।

उक्त चक्र देखने से विदित होता है कि ७ मात्रा के प्रस्तार में १ सर्व लघु, ६ एक गुरु, १० द्विगुरु और चार त्रिगुरु होते हैं।

पंक्ति में सब से अंत का अंक सर्व लघु वाले भेद की संख्या बतलाता है, उसके बाईं ओर पासवाला अंक १ गुरु वाले भेदों की संख्या बतलाता है, इत्यादि।

एकावली मात्रा मेरु

प्रश्न—एकावली मात्रा मेरु कैसे बनाया जाता है।

उत्तर—पहले एक कोष्ट बनाओ फिर उसके तले उतने ही बड़े बड़े कोठों की दोहरी पंक्ति बनाओ, इस भांति कि वह ऊपरवाले कोठे से दाहनी ओर एक कोठे भर निकली रहे। फिर उसके तले तीन तीन कोठों की दोहरी पंक्ति बनाओ। इसी क्रम से आवश्यकतानुसार बढ़ाओ, इस तरह कि बाईं ओर कोठों की सीढ़ी ऊपर से नीचे को बराबर रहती हैं। देखो चक्र।

१ मात्रा	१				
२ "	१ क	१ ख			
३ "	१ ग	२ घ			
४ "	१ च	३ छ	१ ज		
५ "	१ झ	४ ट	ठ ३		
६ "	१ ड	५ ढ	त ६	थ १	
७ "	१ द	६ ध	न १०	प ४	
८ "	१ फ	७ ब	भ १५	१०	१
९ "	१	८	२१	२०	५

अंक भरने की यह विधि है कि प्रत्येक पंक्ति के आदि के कोठे में १ लिखो और जो दोहरी पंक्तियां हैं इनमें से ऊपर-वाली पंक्ति के अन्तवाले कोठे में १ लिखो और नीचे वाली पंक्तियों के अन्तवाले कोठों में २, ३, ४ इत्यादि क्रमशः लिखो। अब कोठों में अंक भरने की यह विधि है कि एक कोठे और उसके आग्नेय कोण वाले कोठे दोनों के अंक जोड़कर उस आग्नेयवाले कोठे के तले जो कोठा है उसमें रक्खो। जैसे—

क + घ=छ, ग + छ=ट, च + ट=ढ, छ + ठ=त, इत्यादि।

इस चक्र से विदित हुआ कि ७ मात्रा के प्रस्तार में १ सर्वलघु, ६ एक गुरु, १० द्विगुरु, ४ त्रिगुरु होते हैं। एकावली चक्र में सर्वलघु, एक गुरु इत्यादि का क्रम बाईं ओर से लगता है।

खंडमेरु

प्रश्न—खंडमेरु की विधि बतलाओ। खंडमेरु का क्या उपयोग है?

उत्तर—खंडमेरु से भी प्रस्तार के अन्तर्गत सर्वलघु, एक गुरु इत्यादि रूपों की संख्या जानी जाती है, परन्तु यह साधारण मेरु से और एकावली मेरु से भी जल्दी बनता है। उसकी विधि यह है कि जितनी मात्रा की संख्या हो उससे एक अधिक कोठे आड़ी पंक्ति में बनाये जाएं। उसके नीचे कोठों की ऐसी पंक्ति बनायी जाए कि जिसमें दो कोठे दाहनी ओर कम रहें, अर्थात् ऊपरवाली पंक्ति नीचे वाली पंक्ति से दो कोठे अधिक निकली हुई रहे। इसी

प्रकार दो दो कोठे कम करके क्रम से नीचे कोठे बनाये जावें, जबतक सब से नीचे एक वा दो कोठे बनें।

क १	ख १	ग १	घ १	च १	छ १	ज १	१ झ
ट १	ठ २	३ ड	४ ढ	५ त	६ थ		
द १	३ ध	६ प	१० फ				
ब १	४ भ						

कोठे भरने की विधि यह है, कि प्रथम ऊपरवाली आड़ी पंक्ति में प्रत्येक कोठे में १ लिखो और बाईं ओर खड़ी पंक्ति में भी प्रत्येक कोठे में १ लिखो, फिर एक कोठे का अंक उसके नैऋत्यवाले कोठे के अंक में जोड़कर इस नैऋत्यवाले कोठे के पूर्ववाले कोठे में रक्खो, जैसे ख + ट=ठ, ग + ठ=ड, ठ + द=ध, ड + ध=प, ध + ब=भ, इत्यादि।

अब प्रत्येक आड़ी पंक्ति के अंत में जो अंक हैं, झ, थ, फ, भ, वही उत्तर है।

इस खंडमेरु से भी जाना गया कि ७ मात्रा के प्रस्तार में १ सर्व लघु, ६ एक गुरु, १० द्विगुरु और ४ त्रिगुरु होते हैं।

मात्रा पताका

प्रश्न—मात्रा का पताका कैसे बनती है? उसका क्या उपयोग है?

उत्तर—मात्रा पताका का मात्रा प्रस्तार में वही उपयोग है जो वर्ण पताका का वर्ण प्रस्तार में।

विधि

जितने मात्रा की पताका बनाना हो उतने ही मात्रा वाली पंक्ति मात्रा मेरु में से निकाल कर आड़ी पंक्ति की भांति लिखो। इसके नीचे खड़े कोठे बनाओ, फिर एक पृथक् स्थान पर समग्र संख्या वाले अंक, जिनको सूची के भी अंक कहते हैं, १, २, ३, इत्यादि लिखो। आड़ी पंक्ति में सब से दाहनी ओर १ रहता है जिससे यह सूचित होता है कि १ भेद सर्वलघुवाला होता है। वह भेद सदैव अन्त का होता है इसलिए १ के नीचे सूची का अन्तिम अंक लिखो। तत्पश्चात् एक गुरु वाले खड़े कोठे को इस भांति भरो—सूची वाले अन्तिम अंक में से शेष अङ्क एक एक करके घटाओ जो बचे उसे कोठे में नीचे रखते चलो, इसी प्रकार द्विगुरु वाला कोठा उसी अन्तिम अङ्क से दो दो अङ्कों का जोड़ घटा घटा कर भरा जावेगा और त्रिगुरु वाला कोठा तीन तीन अङ्कों का जोड़ घटा कर। इसी क्रम से शेष कोठों को भरो। इतना विचार रक्खो कि आया हुआ अंक त्याग दिया जाता है।

जैसे, ७ मात्रा की पताका बनाना है तो प्रथम ७ मात्रा का खण्डमेरु आड़ी पंक्ति में लिखो। फिर सूची के अंक १, २, ३, ५, ८, १३, २१ अलग काग़ज़ पर लिखो। सर्वलघु वाले कोठे में अन्तिम अंक २१ लिखो। एकगुरु कोठे को नीचे से यों प्रारंभ करो—२१-१=२०, २१-२=१९, २१-३=१८ ········ २१-१३=८। द्विगुरु वाला कोठा नीचे से इस भांति भरो-२१-(१ + २)=१८, २१ - (१ + ३)=१७, २१-(१ +५)=१५ ······ २१-(२ + ३)=१६, २१-(२+५)=१४ ··· २१-(३+५)=१३, २१-(३+८)=१०, २१-(३ + १३)=५ ······ २१-(५+८)=८, २१-(५ + १३)=३।

त्रिगुरु वाला कोठा तीन तीन अंकों का जोड़ घटा कर इस भांति भरो—२१-(१+२+३)=१५, २१-(१+२+५)=१३, २१-(१+३+५)=१२, २१-(१+३+८)=९, २१-(१+३+१३)=४,... २१-(१+५+८)=७, २१-(१+५+१३)=२...... ।

आये हुए अंक त्याग दिये जावेंगे, जैसे द्विगुरु कोठे में १८ न भरा जावेगा क्योंकि वह एकगुरु वाले कोठे में आ चुका है।

सात मात्रा की पताका

त्रिगुरु	द्विगुरु	एकगुरु	सर्वलघु
४	१०	६	१
१	३	८	२१
२	५	१३	
४	६	१६	
९	७	१८	
	१०	१९	
	११	२०	
	१२		
	१४		
	१५		
	१७		

दूसरी विधि

प्रथम सूची के अंक १, २, ३, ५...नीचे से ऊपर को लिख आओ, जैसे नीचे की 'ख' पंक्ति में। फिर खण्ड मेरु के अंक ऊपर से नीचे को सूची के अंक एक एक बीच में छोड़कर बाईं ओर लिखो, जैसे 'क' पंक्ति में। इन अंकों के बराबर यथावश्यकता आड़े कोठे बना लो। जैसे 'ग' पंक्ति ६ कोठों की, 'घ' पंक्ति १० कोठों की और 'च' पंक्ति ४ कोठों की। अब 'ग' पंक्ति के कोठे २१ में से ८, ५, ३ इत्यादि घटा घटा के भरो, और 'घ' पंक्ति के कोठे ८ से ३, २, १ घटा घटा कर। फिर ८ के दाहनी ओर वाले १३, १६ इत्यादि से वही ३, २, १ घटा घटा कर भरो। फिर 'च' पंक्ति ३, २, ५, ६ इत्यादि से १ को घटा घटा कर भरो। इसी क्रम से चक्र पूरा करो। पूर्ववत् जो अंक पहले आ चुके हैं वे फिर नहीं लिखे जावेंगे। जब सम मात्रा की पताका होगी तो 'ख' पंक्ति के '१' के बराबर 'क' पंक्ति का '१' पड़ेगा।

सात मात्रा की पताका

	क	ख										
सर्वलघु	१	२१										
		१३										
एक गुरु	६	८	१३	१६	१८	१९	२०	ग				
		५										
द्विगुरु	१०	३	५	६	७	१०,	११	१२	१४	१५	१७	घ
		२										
त्रिगुरु	४	१	२	४	९	च						

आठ मात्रा की पताका

सर्वलघु	१	३४															
		२१															
एकगुरु	७	१३	२१	२६	२९	३१	३२	३३									
		८															
द्विगुरु	१५	५	८	१०	११	१२	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५		
		३										२७	२८	३०			
त्रिगुरु	१०	२	३	४	६	७	९	१४	१५	१७	२२						
चतुर्गुरु	१	१															

मात्रा मर्कटी

प्रश्न—मात्रा मर्कटी की विधि और उपयोग बतलाओ।

उत्तर—उपयोग के लिए वर्ण मर्कटी का प्रकरण देखो।

विधि

मात्रा मर्कटी में सात खड़े कोठे होंगे। १. मात्रा कला, २. भेद संख्या अर्थात् भेदों की समग्र संख्या, ३. सर्व कला संख्या, ४. गुरु संख्या, ५. लघु संख्या, ६. वर्ण संख्या, ७. पिण्ड।

पहले आड़े कोठों में १, २, ३ इत्यादि लिखो। दूसरे कोठों में सूची के अंक १, २, ३, ५, ८ इत्यादि भरो। तीसरा कोठा पहले और दूसरे कोठे के अंकों को गुणा करके भरो। चौथा कोठा इस भांति भरो कि पहले शून्य फिर १, फिर १ दूने २ को इस १ के ऊपर वाले ४ से घटा कर २ लिखो, फिर इसके दूने ४ को इसी २ के ऊपर वाले ६ से घटा कर लिखो। इसी प्रकार प्राप्त अंक का दूना उस प्राप्त अंक के ऊपर वाले अंक

से घटा कर लिखते जाओ। पांचवां कोठा इस भांति भरो कि चौथे कोठे के अंक दूने करके तीसरे कोठे के अंक में से घटाओ। छटवें कोठे में चौथे, पांचवें का जोड़ भरो।

कोई कोई सातवां कोठा पिण्ड का रखते हैं। उसमें तीसरे कोठे का आधा लिखते हैं, परन्तु पहले घर में शून्य लिखते हैं।

११ मात्रा की मर्कटी

१. कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
२. भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४
३. सर्वकला	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	१५८४
४. गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०
५. लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	७४०
६. वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	११६०
७. पिण्ड	०	२	४$\frac{1}{2}$	१०	२०	३९	७३$\frac{1}{2}$	१३६	२७४$\frac{1}{2}$	३४५	७९२

प्रस्तार के मत

प्रस्तार की जो रीति यहां तक लिखी गयी है वह नाग मत के अनुसार है। प्रस्तार के तीन अन्य मत भी हैं, अर्थात् जैन मत, यवन मत और भरत मत। ये चार मत केवल विधि क्रम में पृथक् हैं, सिद्धांत सब का एक ही है।

जैन मत प्रस्तार

जैन मत से प्रस्तार सर्व गुरु लिख कर प्रारंभ करते हैं। भेद इतना है कि नाग मत से बाएँ छोर के गुरु के नीचे लघु लिख कर शेष दाहने ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतारते हैं और बाईं कमी गुरु लिखकर पूरी करते हैं, परन्तु जैन मत से दाहनी ओर के गुरु के नीचे लघु लिखते हैं और बाईं ओर के गुरु ज्यों के त्यों उतारते हैं, और दाहने ओर की कमी गुरु लिख पूरी करते हैं।

यदि नाग मत से प्रस्तार को अच्छी तरह समझ लिया है तो अन्य मत से प्रस्तार करने में कोई कठिनता न होनी चाहिये।

३ वर्ण का प्रस्तार	४ मात्रा का प्रस्तार	५ मात्रा का प्रस्तार
SSS	SS	SSI
SSI	SII	SIS
SIS	ISI	SIII
SII	IIS	ISS
ISS	IIII	ISII
ISI		IISI
IIS		IIIS
III		IIIII

असम मात्रा में तो एक मात्रा अधिक पड़ती है, उसका लघु चिह्न दाहिने छोर में रक्खो।

यवन मत प्रस्तार

यवन मत से प्रस्तार सर्व लघु लिख कर और दाहिनी ओर प्रारंभ किया जाता है। अर्थात् सब से दाहनी ओर के लघु के नीचे गुरु लिखकर बाईं ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतारते जाते हैं, और दाहनी ओर लघु चिह्नों से संख्या पूरी करते हैं।

३ वर्ण का प्रस्तार	४ मात्रा का प्रस्तार	५ मात्रा का प्रस्तार
।।।	।।।।	।।।।।
।।ऽ	।।ऽ	।।।ऽ
।ऽ।	।ऽ।	।।ऽ।
।ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।।
ऽ।।		। ऽऽ
ऽ।ऽ		ऽ।।।
ऽऽ।		ऽ।ऽ
ऽऽऽ		ऽऽ।

चेतावनी

१—यवन मत से मात्रा प्रस्तार करने में ध्यान रक्खो कि जब किसी पंक्ति में दाहनी छोर एक ही लघु होगा तो उसके नीचे गुरु नहीं लिखा जायगा, वरन् उसके बाम दिशा वाले गुरुको नांघकर जो लघु होगा उसके नीचे गुरु लिखा जावेगा, और उसके बाईं ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतार कर दाहनी

और लघु चिह्नों से मात्रा संख्या पूरी की जावैगी। देखो ५ मात्रा के प्रस्तार में तीसरी पंक्ति के नीचे चौथी पंक्ति।

२—दाहनी ओर के दो लघु के नीचे एक गुरु लिखा जाता है। देखो ५ मात्रा के प्रस्तार में चौथी पंक्ति के नीचे पांचवीं पंक्ति।

६ मात्रा का प्रस्तार

। । । । । ।	। ऽ ऽ ।
। । । । ऽ	ऽ । । । ।
। । । ऽ ।	ऽ । । ऽ
। । ऽ । ।	ऽ । ऽ ।
। । ऽ ऽ	ऽ ऽ । ।
। ऽ । । ।	ऽ ऽ ऽ
। ऽ । ऽ	

तीसरी पंक्ति से चौथी कैसे बनी इस के लिये देखो प्रथम चेतावनी, तथा चौथी से पांचवी कैसे बनी इसके लिये देखो दूसरी चेतावनी।

नाग मत प्रस्तार का उलटा यवन मत प्रस्तार है। काग़ज़ घुमाकर यदि नीचे की ओर से ऊपर को यवन मत प्रस्तार पढ़ा जाय तो स्पष्ट नाग मत का क्रम हो जाता है।

भरत मत प्रस्तार

जिस तरह यवन मत प्रस्तार नाग मत प्रस्तार का सब भांति उलटा है उसी तरह जैन मत प्रस्तार का उलटा भरत मत प्रस्तार है।

वर्ण प्रस्तार

प्रथम सर्वलघु लिखो और बाईं ओर से प्रस्तार प्रारंभ करो अर्थात् लघु के नीचे गुरु लिखो और दाहनी ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतारो और बाईं ओर की कमी लघु चिह्नों से पूरी करो।

चार वर्ण का प्रस्तार

I I I I	I S S I	I I S S
S I I I	S S S I	S I S S
I S I I	I I I S	I S S S
S S I I	S I I S	S S S S
I I S I	I S I S	
S I S I	S S I S	

मात्रा प्रस्तार

प्रथम सर्वलघु लिखो, बाईं ओर से प्रस्तार प्रारंभ करो, बाईं ओर पंक्ति के छोर में जो लघु हो उसे छोड़ दो, उसके दाहने जो लघु हो उसके तले गुरु लिखो और दाहनी ओर के चिह्न ज्यों के त्यों उतारो। और बाईं ओर मात्रा संख्या पूरी करने को लघु चिन्ह लिखो।

४ मात्रा का प्रस्तार	५ मात्रा का प्रस्तार	
I I I I	I I I I I	S S I
S I I	S I I I	I I I S
I S I	I S I I	S I S
I I S	I I S I	I S S
S S		

विषम संख्या के प्रस्तार में जब सर्व गुरु और एक लघु बाईं ओर आवे तब प्रस्तार समाप्त जानो।

उपसंहार

जिन पाठकों ने नाग मतानुसार नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, पताका, मर्कटी को समझ लिया है वे अन्य तीन मतों के अनुसार भी नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, मर्कटी, पताका की विधि स्वयम् समझ लेंगे, यहां विस्तार करना अनावश्यक है।

प्रस्तार के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि छन्दों की संख्या अगणित हो सकती है, और चतुर कवि नये छन्दों की रचना करने में पूर्णतया समर्थ हैं। साथ ही यह भी समझ में आजाता है कि किसी भाषा में कोई ऐसा छन्द नहीं हो सकता जो प्रस्तारों के अन्तर्गत न हो। इस प्रकार पिंगल की रीति मात्र वैज्ञानिक है।

इति शुभम्।

सुलभ साहित्य माला

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित

सम्मेलन की स्थायी समिति ने सुलभ साहित्यमाला निकालने का निश्चय किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों के सुन्दर और सस्ते संस्करण प्रकाशित किये जायँ, जिससे हिन्दी हितैषिणी जनता में उन ग्रन्थ रत्नों का बड़ी ही सुलभता से प्रचार हो। अब तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित द्वितीय संस्करण, मू० ।॥)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, "मिश्रबन्धु" कृत, पृष्ठ संख्या १८८, मूल्य ।=)

३—भारत गीत सुप्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक रचित, मू०≡)

४—भारतवर्ष का इतिहास, प्रथमखण्ड लेखक "मिश्रबन्धु" मूल्य १॥)

५—राष्ट्र भाषा—इसमें महात्मा गांधी जी के राष्ट्र भाषा सम्बन्धी प्रश्न के उत्तरों का भी संग्रह है। लेखक "एक भारतीय हृदय" मूल्य ॥)

६—शिवा बावनी-टिप्पणी एवं भावार्थ सहित, मूल्य ≡)

७—सरल पिङ्गल, मूल्य ।)

८—सूरदास की विनय-पत्रिका मूल्य ।-)

९—भारतवर्ष का इतिहास, द्वितीय खण्ड ले० मिश्रबन्धु मूल्य २॥)

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें

प्रश्नपत्र संग्रह १९७१-७२, ... ≡

प्रश्नपत्र संग्रह १९७३, १९७४, १९७५, १९७६, १९७७ प्रत्येक |-)

इतिहास (मराठी भाषा के प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय पण्डित विष्णुशास्त्री चिपलूणकर लिखित निबन्ध का अनुवाद) ≡

हिन्दी-भाषा-सार भाग १ (द्वितीय संस्करण) ...

सूर्य सिद्धान्त ... ...

द्वितीय सम्मेलन के सभापति का भाषण ... ...

तृतीय सम्मेलन के सभापति का भाषण ... ...

प्रथमालङ्कार निरूपण (सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा के लिये स्वीकृत) ... ...

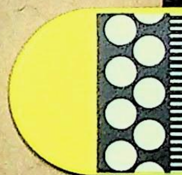
मद्रास प्रान्त में हिन्दी प्रचार का विवरण ... ...

हिन्दी-विद्यापीठ ... ...

बाबू भगवान दास जी का भाषण, हिन्दी विद्यापीठ खोलने के समय ... ... =)

प्रथम सम्मेलन की लेखमाला			॥|)	प्रथम वर्ष का कार्य विवरण			|)
द्वितीय	”	”	१)	द्वितीय	”	”		
तृतीय	”	”	|॥)	तृतीय	”	”	|=
चतुर्थ	”	”	॥|)	चतुर्थ	”	”	॥
पञ्चम	”	”	॥)	पञ्चम	”	”	|॥
षष्ठ	”	”	|॥)	षष्ठ	”	”	
सप्तम	”	”	॥=)	सप्तम	”	”	॥=)
अष्टम	”	”	१)	अष्टम	”	”	|)
नवम	”	”	१॥)	नवम	”	”	|=)

विवरण पत्रिका सं० १९७९ -)




4.3,10
1265